अध्याय-3

स्वाभिमान

स्वाभिमान शब्द स्व + अभिमान से मिलकर बना है। अभिमान को आमतौर पर अच्छे अर्थों में नहीं लिया जाता है। उसे अहंकार का समानार्थी मान लिया जाता है। अत: अभिमान न करने की बात कही जाती है; किंतु स्वाभिमान उच्चतर मूल्यों का वाचक है। इसमें 'मैं ही सब कुछ हूँ' का भाव नहीं होता है। इसमें यदि एक ओर सम्मान की रक्षा का भाव है तो दूसरी ओर अपनी वैभवशाली परंपरा को बनाए रखने के लिए यथेष्ट त्याग, बलिदान और पराक्रम प्रदर्शन का भाव है।

स्वाभिमान चारित्र में निर्मलता, स्वभाव में सरलता और वाणी में सहजता की अपेक्षा रखता है। उद्दण्डता और उच्छृंखलता स्वाभिमान का अवमूल्यन करते हैं। वस्तुत: स्वाभिमान अपनी माटी, देश और पूर्वजों द्वारा स्थापित रीति-रिवाजों के गौरव के रक्षण में प्रदर्शित होता है। यह उनके यश को किसी भी स्थिति में धूमिल न होने देने की प्रतिज्ञा है।

निम्न प्रेरक-प्रसंगों में स्वाभिमान का भाव अच्छी तरह परिभाषित है, जो चारित्र-निर्माण की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

प्रेरक-प्रसंग

- इलाहाबाद के नजदीक नैनी जेल में बंद एक राजनीतिक कैदी को घर से संदेश मिला कि उसकी पुत्री गम्भीर रूप से बीमार है वह तुरंत घर पहुँचे। लेकिन कैदी मजबूर था, वह जेल से बाहर नहीं जा सकता था, क्योंकि ब्रिटिश सरकार के दमनकारी जेल नियमों के अनुसार राजनीतिक कैदी बिना पेरोल के नहीं छूट सकते थे। अन्य सह-कैदियों ने उसे सलाह दी कि वह अपनी पुत्री की गम्भीर बीमारी की लिखित सूचना जेल प्रशासन को देकर छुट्टी प्राप्त कर शीघ्र घर पहुँचे। लेकिन इस मामले में वह समझौता करने को कतई तैयार नहीं था। वह स्वाभिमानी और राष्ट्रभक्त था। उसकी दृष्टि में राष्ट्रप्रेम ही सर्वोपरि था। उसका विचार था कि 'मैं स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जेल में आया हूँ, अगर माफीनामा लिखकर अपनी पुत्री से मिलने जाता हूँ तो न केवल राष्ट्र के प्रति मेरे स्वाभिमान को ठेस लगेगी बल्कि भारतमाता की दृष्टि में भी मैं अपराधबोध से ग्रस्त रहूँगा।' सह-कैदियों द्वारा पिता-पुत्री रिश्ते का वास्ता देने के साथ-साथ कई अन्य तरीकों से उसे घर जाने के लिए बाध्य किया गया, लेकिन उसने किसी की न सुनी।

  अंतत: जेल प्रशासन ने सम्भवत: उस राजनीतिक कैदी के दृढ़ निश्चय और स्वाभिमान के अडिग निर्णय से अभिप्रेरित होकर स्वत: ही उसे बिना किसी शर्त के जेल से छोड़ दिया ताकि वो अपनी गम्भीर रूप से बीमार पुत्री से मिल सके। यह स्वाभिमानी कोई और नहीं, बल्कि लाल बहादुर शास्त्री थे।
- स्वामी रामतीर्थ भारतवर्ष का संदेश देने अमेरिका पहुँचे। वहाँ उन्हें विद्वानों एवं जनता ने सम्मानित किया। अमेरिका में उन्होंने भारतीय धर्म एवं संस्कृति पर व्याख्यान देते हुए ढाई वर्ष व्यतीत किए। वहाँ उन्हें भेंट-स्वरूप प्रचुर धनराशि भी मिली, किंतु वह सब स्वामी जी ने अन्य देशों के अकाल पीड़ितों के लिए समर्पित कर दी। अपने लिए कुछ भी स्वीकार नहीं किया।

अमेरिका से लौटते समय उनके कुछ अमेरिकन भक्तों ने उनसे अमेरिका की पोशाक पहनने का आग्रह किया। स्वामी जी ने कोट-पेंट न पहनकर उन्हें शरीर पर लटका लिया और अमेरिकी जूते पाँव में डालकर खड़े हो गए। एक कीमती टोप जो उन्हें अमेरिका में मिला था, उसे उन्होंने मस्तक पर धारण नहीं किया बल्कि उस टोप के बदले सुन्दर प्रकार का साफा ही माथे पर लपेट लिया। पूछा गया-'आपने इतना सुन्दर टोप तो पहना ही नहीं?' बड़ी मस्ती में उन्होंने उत्तर दिया- 'राम के मस्तक पर तो सदैव महान् भारतवर्ष ही रहेगा।'

इतना कहकर उन्होंने नीचे झुककर मातृभूमि की मिट्टी उठाई और माथे पर लगा ली। अलमस्त, महाप्राण की भारत-भक्ति ऐसी ही थी।

- प्रो. जगदीश चन्द्र बसु लंदन विश्वविद्यालय से विज्ञान-स्नातक होकर भारत वापस लौटे। यहाँ आते ही कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में भौतिकी के प्राध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। उस समय कालेजों में अधिकांश अध्यापक अंग्रेज ही हुआ करते थे। बंगाल का शिक्षा-संचालक भी अंग्रेज था। अत: भेदभाव की नीति बरती जाती थी। अंग्रेजों की तुलना में भारतीय प्राध्यापक को कम वेतन दिया जाता था।

  आचार्य बसु ने वेतन लेने से इंकार कर दिया। उन्होंने इस अन्याय का विरोध करते हुए कहा 'मैं वेतन लूँगा तो पूरा, अन्यथा वेतन नहीं लूँगा।'

  पूरे तीन वर्ष तक उन्होंने वेतन नहीं लिया। वेतन न लेने के कारण आर्थिक तंगी हो गई। कलकत्ता का महँगा मकान छोड़कर नगर से बाहर दूर एक सस्ता घर लिया। कलकत्ता आने जाने के लिए वे नाव से हुगली नदी पार करते और पति-पत्नी स्वयं नाव लेकर उस पार जाते। उनकी पत्नी नाव वापस ले आती।

  सारे कष्टों के बीच भी उन्होंने धैर्य और स्वाभिमान नहीं छोड़ा। अंतत: कॉलेज प्रशासन ने उन्हें पूरा वेतन दिया।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. स्वाभिमान से क्या आशय है?
2. नैनी जेल में बंद राजनीतिक कैदी कौन था?
3. लाल बहादुर शास्त्री ने माफीनामा क्यों नहीं लिखा?
4. स्वामी रामतीर्थ ने अमेरिका में किस विषय पर व्याख्यान दिए थे?
5. 'राम के मस्तक पर तो सदैव महान् भारत वर्ष ही रहेगा।' स्वामी रामतीर्थ के इस कथन में छिपे स्वाभिमान के भाव को स्पष्ट कीजिए।
6. आचार्य बसु ने कॉलेज में वेतन लेने से इंकार क्यों कर दिया था?
7. 'आचार्य बसु ने आर्थिक तंगी सहते हुए भी अपने स्वाभिमान की रक्षा की।' इसे प्रसंग के माध्यम से सिद्ध कीजिए।

प्रायोजना कार्य

1. विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर स्वाभिमान से संबंधित किसी एकांकी का अभिनय कीजिए।
2. आप किसी ऐसी घटना को कक्षा में सुनाइए, जिससे आपका स्वाभिमान जाग उठा हो।
3. महाराणा प्रताप तथा अन्य स्वाभिमानी महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग संकलित कीजिए। इन प्रसंगों की कक्षा में चर्चा कीजिए।